परशूराम शुक्ल के बाल काव्य में ''सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना''

डॉ. संगीता पाठक[1], छाया श्रीवास्तव[2]

[1]अधिष्ठाता मानविकी एवं भाषा विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) भारत
[2]शोधार्थी, आईसेक्ट विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) भारत

सारांश

श्री शुक्ल ने आधुनिक युग में भी अपनी संस्कृति तथा सामाजिक परम्पराओं का विशेष ध्यान अपनी कविताओं में रखा है। उनका उद्देश्य बाल काव्य में नई पीढी को मनोरंजन के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण स्थान देना रहा है। उन्होंने बालकों में मनोरंजक कहानियों के माध्यम से सामाजिक आदर्श, परम्पराएं, संस्कृति चेतना जगाने का प्रयास किया है। ऐसा प्रयास उनके बाल काव्य में देखने को भी मिलता है। उनकी प्रत्येक कविता में कुछ न कुछ संदेश दिया जाता रहा है।

I विश्लेषण

बाल मनोविज्ञान के पारखी बालसाहित्य के धनी, वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्री परशुराम शुक्ल हिन्दी साहित्य के मजबूत स्तम्भ है। भारत की कोई भी बाल पत्रिका श्री शुक्ल क लेखन से अछूती नहीं है। उनके आलेख, कहानी, कविताएँ भारत की अनेकों बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। आपने शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन बाल साहित्य लिखा। कई बालपयोगी कविताएं, कहानियां लिखी इस समय भी आप साहित्य सजृनरत है।

शुक्ल जी ने लेखन के क्षेत्र में 1986 में प्रवेश किया। उनकी पहली महत्वपूर्ण सफलता यह थी कि उनकी प्रथम बाल रचना 'नंदन' पत्रिका में 'बड़ा कौन' शीर्षक से प्रकाशित हुई।

श्री शुक्ल का बाल साहित्य बड़ा विस्तृत, विविधतापूर्ण तथा उद्देष्यपूर्ण है।

श्री शुक्ल ने बाल साहित्य के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों, अज्ञानता, बुराईयों की और ध्यान केन्द्रित किया गया है। बच्चों का कोमल मन अच्छाई, बुराई का भेद नहीं कर पाता है। अतः नासमझी के कारण बच्चे बुराईयों में पड़ जाते हैं। उन्होंने अपनी कई कविताओं में यह बोध कराया है कि समाज में व्यक्ति अनैतिक आचरण व अपराधी प्रवृत्ति का शिकार हो रहा हैं, किन्तु इसे समाज के प्रयासों से हटाया जा सकता है। वे लिखते है कि–

चोरी, रिश्वत और मिलावट, इनको आज हटाना है
भ्रष्ट आचरण और अशिक्षा जड़ से आज मिटाना है।

शिक्षा की और भी आपने अपनी कविताओं के माध्यम से कई संदेश दिए है कामना नामक अपने कविता संग्रह में वे मार्ग बताते हुए कहते है कि समाज में फैली अशिक्षा, अज्ञानता को दूर करने का प्रयास किया गया है।

शालाओं में बिना भेद के, ज्ञान पा सकते हो।
अपनी क्षमता विकसित करके, ऊँचे पद तक जा सकते हो।

एकता में, समूह में शक्ति होती है। समाज में रहते हुए हर प्राणी को स्नेहपूर्वक रहना चाहिए। एक होकर रहने से कई बिगड़े कार्य भी पूरे हो जाते हैं। यह बात वे बच्चों को समझाते हुए कहते है कि–

शक्ति एकता में है इतनी, सबल शत्रु थर्राता है
इस ताकत के आगे बच्चों, ईश्वर भी झुक जाता है।

शिक्षक और बच्चों का महत्वपूर्ण संबंध होता है माता–पिता तो केवल बच्चों को जन्म देते है बच्चों को समाज में सम्मानजनक ढंग से जीवन व्यतीत करने और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भागीदारी लेने के योग्य उन्हें शिक्षक ही बनाता है।

सत्य न्याय के पथ पर चलना, शिक्षक हमें बताते हैं
जीवन संघर्षों से लड़ना शिक्षक हमें सिखाते हैं।

श्री शुक्ल के बाल साहित्य पर सामाजिक, पारिवारिक रिश्तों का पूर्ण प्रभाव रहा है। उन्होंने हर रिश्ते की महत्ता को बताया है जो बाल मनोभावों को अत्यन्त प्रभावित करते सकेः–

चले गये क्यों दूर बहुत तुम, छोड़ मुझे यूँ दादा।
तोड़ लिया क्यों रिश्ता मुझसे तोड़ दिया क्यों वादा?

श्री शुक्ल आधुनिक होते हुए भी परम्पराओं का पालन करने में विश्वास रखते है। उनका मत है कि हम अपनी संस्कृति, अपनी परम्परा का पालन करते हुए भी आधुनिक बन सकते है। वे ईष्वर का महत्व व स्पष्ट करते हुए कहते है कि–

परमपिता परमेश्वर तुमसे, मैं कुछ कहने आया।
तुमसे बढ़कर और न कोई, यह बस समझ में आया।

भारत पर्वो और त्यौहारों का देश है। यहां पर सभी धर्मों के लोग रहते है और त्योहार मनाते है। रंग के, उल्लास के त्योहार होली पर वे लिखते है कि–

राजू लाल गुलाल उड़ाता, मोनु हरा रंग बरसाता।
सोनू जल की करे फुहार, होली रंगों का त्यौहार

भारतीय संस्कृति में मॉ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। एक छोटी सी बिटिया अपनी मां के लिए क्या सोचती है, इसका सुन्दर चित्रण शुक्ल जी ने किया है।

मेरी मां में तुझको जॉनू, तुझकों भीतर तक पहचानू।

तू मेरी अच्छी मम्मी है, मैं तेरी नन्ही सी शानू।

इंसान कहीं भी चला जाएँ लेकिन अपना घर अपना परिवार और अपनी संस्कृति कभी नहीं भूलता और उसे वह सब सदैव याद आता है क्योंकि एक व्यक्ति की पहचान ही उसकी संस्कृति से होती है। श्री शुक्ल ने जो बाल मनोविज्ञान के पारखी है। उन्होंने बाल मनोदशा के बारे में अपने विचारों से प्रदर्शित किया है कि बालपन का समय स्मृति पटल पर हमेशा रहता है और बहुत याद आता है।

अब तो मेरे मन में आता।
जोड़ू अपने घर से नाता।
खेतऔर खलिहान बुलाते।
गेहूं सरसों धान बुलाते।।

नदियां वर्षों से कलकल कर बहती आयी है और शुरू से ही मानव के लिए जीवन दायिनी रही है और हमारी संस्कृति में जीवन देने वाली मां अर्थात नदी को मां का स्वरूप माना जाता है। जो वह जहां भी, जहां से बहती है। उस शहर गांव को हरा भरा करती है।

नदी निकलती है पर्वत से
मैदानों में बहती है
और अंत मेंमिले सागर से
एक कहानी कहती है।

II उपसंहार

इस प्रकार शुक्लजी ने अपने बाल काव्य में प्रकृति से लेकर ममता तक, त्योहारों से लेकर याद आते खेत –खलिहान तक ईष्वर से लेकर अतिप्रिय दादाजी तक शाला और षिक्षकों के महत्व पर सद् विचारों व संस्कारों पर हर क्षेत्र में बच्चों के लिए लिखा है।

संदर्भग्रंथ

[1] परशुराम शुक्ल, कामना शेखर प्रकाशन इलाहाबाद 1991, पृष्ठ 8

[2] परशुराम शुक्ल, कामना शेखर प्रकाशन इलाहाबाद पृष्ठ 1

[3] परशुराम शुक्ल, एकता की शक्ति, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद 1991, पृष्ठ 4

[4] परशुराम शुक्ल, पुरस्कृत बालगीत भाग तीन किड्स पब्लिकेशन सन्स, इंदौर 2003 पृष्ठ 19

[5] परशुराम शुक्ल, ''मोटूराम'' रवि प्रकाशन नई दिल्ली 2002 पृष्ठ 8

[6] परशुराम शुक्ल, मंगलगृह जाएंगे, विज्ञान भारती, गजियाबाद 20085 पृष्ठ 12

[7] परशुराम शुक्ल, ''आओ बच्चों गाओ बच्चों'' सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 2009 पृष्ठ 45

[8] परशुराम शुक्ल, 'मेरा रोबो बड़ा निराला' जनवाणी प्रकाशन दिल्ली 2017 पृष्ठ 45

[9] राजेन्द्र कुमार शर्मा, प्रतिनिधि बाल कविताएं, रामश्री प्रकाशन 23 आइवरी प्लेटिनम पार्ग, 2015 पृष्ठ 23

[10] राजेन्द्र कुमार शर्मा, प्रतिनिधि बाल कविताएं, रामश्री प्रकाशन 23 आइवरी प्लेटिनम पार्ग, 2015 पृष्ठ 28